मनोज चित्र कथा
मूल्य 3.50 संख्या 39
तिरंगे की कसम
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
C.M. Vitankar

तिरंगे की कसम
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00 1/2
राम-रहीम
लेखक: बिमल चटर्जी
समुद्र में खड़ा वह विशाल, किन्तु वीरान पहाड़ भारत की ही समुद्री सीमा में आता था, लेकिन उसका कोई उपयोग न जान कर भारत सरकार उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देती थी। अत: वर्षों से वह पहाड़ उपेक्षित-सा था।
लेकिन भारत को इस बात का सपने में भी गुमान नहीं था कि उसी वीरान व अनुपयोगी पहाड़ पर उसके पड़ौसी देश चीन की वर्षों से नजर लगी हुई थी और वह भारत की सैनिक एवं वैज्ञानिक गतिविधियोंपर नजर रखने के लिये कुछ ही वर्ष पूर्व आधुनिक एवं वैज्ञानिक उपकरणों से पूर्ण एक भयानक स्टेशन वहां कायम कर चुका था, जिसका गुप्त नाम उसने स्टेशन जेबरा रख छोड़ा था।
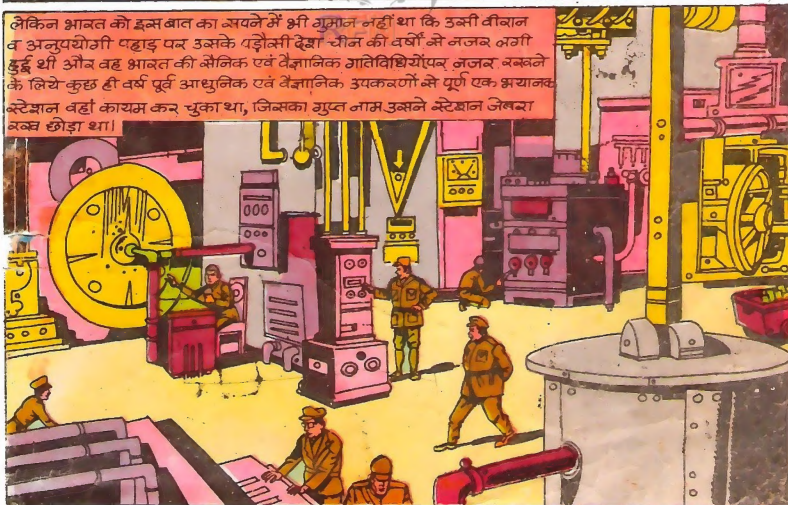
उस स्टेशन का संचालन चीनी सीक्रेट सर्विस का खूंखार एवं मक्कार चीफ 'कामरेड तुंग' कर रहा था।
क्या रिपोर्ट है-?
चीफ, पेकिंग से अभी-अभी कन्ट्रोल रूम में खबर आई है कि फील्ड-मार्शल जनरल चांगली किसी आवश्यक कार्य से तुरन्त आपसे मिलना चाहते हैं।

ओह, क्या काम हो सकता है उन्हें?
सुनो, मैसेज भिजवा दो- कल रात ग्यारह बजे वे मिलने आ सकते हैं, लेकिन भारतीय जल और वायु सेना की नजर से बचकर। हम उनका इंतजार करेंगे।
ओ.के. कामरेड!

और हां, सुरक्षा गार्डों और कन्ट्रोल रूम को इस सम्बंध में सूचित करना न भूलना। जैसे ही जनरल चांगली की ओर से तीन बार गुप्त सिग्नल मिले, भीतर आने का शटर हटा देना।
ऐसा ही होगा श्रीमान, आप निश्चिंत रहें।

और अगले दिन, रात के ठीक ग्यारह बजे-
सर, इस समय हम स्टेशन जेबरा के ठीक ऊपर हैं।

हेलिकाप्टर के नीचे लगी हरी बत्ती जैसे ही तीन बार जली और बुझी, पहाड़ के दहाने पर लगी पहाड़ जैसे रंग से पुती एक फौलादी चादर धीरे-धीरे एक ओर सरकती चली गयी।

घर्र...र...र...

और फिर पहाड़ के मुख पर पड़ा शटर बन्द होता चला गया।
वाह! इस अजूबे स्टेशन के निर्माण के लिये वास्तव में कामरेड तुंग बधाई का पात्र है।
एक स्थान पर बने हेलीपेड पर हेलिकाप्टर के उतरते ही कामरेड तुंग स्वयं जनरल चांगली के स्वागत को वहां पहुंचा।
हैलो जनरल
हैलो कामरेड!
जनरल चांगली हेलिकाप्टर से उतरकर कामरेड तुंग के पास पहुंचा।
आप का यहां स्वागत है जनरल!
और तुम्हें इस आश्चर्यजनक स्टेशन के लिये मेरी ओर से बधाई!
फिर दोनों एक ओर को बढ़ चले।
मुझे आपके आने पर आश्चर्य है जनरल! क्या मैं आपके आगमन का कारण जान सकता हूं?
मैं दक्षिणी सीमा पर पहाड़ों में स्थापित किये गये भारत के उन नये फौजी अड्डो के सिलसिले में बात करने के लिये आया हूं। जिनकी जानकारी प्राप्त करने के लिये कुछ माह पूर्व ही सरकार की ओर से निर्देश दिया गया था।

कामरेड तुंग चलते-चलते ही चौंका, फिर आश्चर्य भरे स्वर में बोला-
ओह! लेकिन इस सम्बंध में तो मैं अपनी असफलता की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को भेज चुका हूं जनरल! मुझे खेद है कि काफी कोशिश करने के बावजूद भी मैं भारत की दक्षिणी सीमा पर बनाये गये भारत के उन नये फौजी अड्डों के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर सका, मेरे एजेंट नाकाम रहे।

मैं जानता हूं कामरेड, इसीलिये तो मैं आपसे विशेष रूप से मिलने आया हूं।
क्या मतलब? मैं कुछ समझा नहीं।
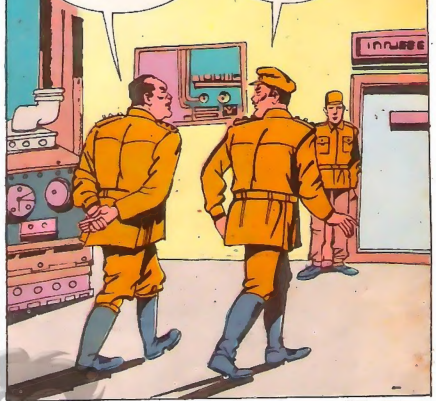
बताता हूं, लेकिन इससे पहले मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या भारत के उन नये फौजी अड्डों की महत्ता के बारे में आप जानते हैं?
हां, भारत की सीमा में पहाड़ों में बनाए गये वे नये फौजी अड्डे वैज्ञानिक उपकरणों और आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से पूर्णतया लैस हैं...

...और युध्द के समय भारत के यही नये फौजी अड्डे हमारे सैनिकों के मार्ग में न केवल भयानक रुकावट बन जायेंगे, बल्कि हमें काफी नुकसान भी पहुंचायेंगे।
बिल्कुल ठीक, कामरेड तुंग...

...और इसीलिये मैं चाहता हूं कि जल्द से जल्द भारत के उन नये फौजी अड्डों के विषय में सारी जानकारी हासिल की जाये, ताकि उसकी सीमा में हमारे सैनिकों को घुसते समय किसी किस्म का खतरा पेश न आये।
वह तो ठीक है जनरल, लेकिन सवाल यह है कि उन अड्डों की जानकारी प्राप्त की जाये तो कैसे? मेरी तमाम कोशिशें तो बेकार ही गईं।

लेकिन मैंने यह जानकारी प्राप्त करने का एक नया उपाय सोच लिया है।
क्या उपाय सोचा है आपने?

तब जनरल चांगली ने एक फोटो जेब से निकालकर चीफ तुंग की ओर बढ़ाते हुए कहा—
पहले यह तस्वीर देखो और इसे पहचानो।
ओह!

तुंग ने फोटो लेकर जैसे ही उस पर दृष्टि डाली, बुरी तरह चौंक उठा।
व्हाट-कर्नल राघव भारतीय बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स का विशिष्ट आफिसर!

चांगली मुस्कुराता हुआ बोला—
आपने बिल्कुल ठीक पहचाना कामरेड, यह कर्नल राघव ही है। मुझे विश्वास है कि तुम इसके बेटे राम—और राम के दोस्त रहीम से भी अच्छी तरह परिचित होगे, जो बाल सीक्रेट सर्विस के खतरनाक एजेण्ट 00/2 हैं।
ओफ्फ! किन शैतानों का नाम ले दिया आपने जनरल। उनका तो मात्र नाम सुनते ही मेरे तन-बदन में आग लग जाती है। कम्बख्त मेरे कई विश्वस्त एजेण्टों ठिकाने लगा चुके हैं। एक बार ये दोनों मेरे हाथ लग जायें तो...।

और तुंग के वाक्य पूरा करने से पहले ही चांगली बोल उठा—
यदि मेरी योजना सफल हो गई कामरेड तो बस समझ लो ये छोकरे आपके हाथ लग ही गये।
ओह! आप अपनी योजना बताइये, मैं हर कीमत पर उसे सफल करने की कोशिश करूंगा।

तो सुनिये, आपको हिंदुस्तान से कर्नल राघव का अपहरण कर यहां लाना होगा। क्योंकि यही वह व्यक्ति है, जिसकी विशेष देख-रेख में हमारी दक्षिणी सीमा पर वे गुप्त फौजी अड्डे तैयार किये गये हैं। यदि कर्नल राघव हमारे कब्जे में आ गये तो समझ लीजिये हमारी सारी मुश्किल आसान हो जायेगी। आजकल वे घर पर छुट्टियां बिता रहे हैं।

चांगली की योजना सुन तुंग प्रसन्नता से उछल पड़ा।
गुड। अब मैं सब कुछ समझ गया। आप निश्चिंत रहें। एक सप्ताह के भीतर-भीतर कर्नल राघव आपके सामने होगा।
गुड। मुझे आपसे यही उम्मीद थी।

अब मुझे आज्ञा दीजिये, जब वह आपके कब्जे में पहुंच जाये तो मुझे सूचित कर दीजियेगा।
अवश्य जनरल, और शीघ्र ही।
फिर चांगली, तुंग से विदा लेकर अपने हेलिकाप्टर पर सवार होकर अड्डे से बाहर निकल गया।

चांगली को विदा करने के बाद कामरेड तुंग ने अपनी मेज के नीचे लगा एक गुप्त बटन दबाया। अगले ही पल दरवाजे के बाहर खड़ा सैनिक उनके सामने आ खड़ा हुआ।
कामरेड बांग-ली को भेजो।
यस सर!

और कुछ ही देर बाद उसके सामने चीनी सीक्रेट सर्विस का एक क्रूर और जालिम एजेण्ट बांग-ली खड़ा हुआ था।
इस फोटो को देखो कामरेड और अच्छी तरह से इसका चेहरा अपने दिमाग में बिठा लो।
यस चीफ!

इसका नाम कर्नल राघव है। इंडियन बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स का एक विशिष्ट अफसर। तुम्हें हिन्दुस्तान से इसका अपहरण कर इसे यहां पहुंचाना है।
समझ गया चीफ! कुछ ही दिनों में यह आपके सामने होगा।

लेकिन दो बातों का विशेष ध्यान रखना, एक तो इसका अपहरण खुद न करके वहां के स्थानीय बदमाशों से कराना – दूसरे इसके बेटे राम और रहीम से सावधान रहना।
क्या–? राम और रहीम इसी के बेटे हैं।

हां, एक बेटा और दूसरा बेटे का जिगरी दोस्त। वह भी इन्हीं के साथ रहता है। मैं नहीं चाहता कि जरा-सी भी लापरवाही होने पर तुम इनके चक्कर में फंस कर पुलिस की निगाहों में आओ।
ओह!

ठीक है चीफ, मैं सब समझ गया। आप निश्चिंत रहें।
गुड! तो जाओ, और सफर की तैयारी करो।
राईट सर!

उधर भारत की सरजमीं पर—
गुड मॉर्निंग डैडी!
गुड मॉर्निंग अंकल!
अरे-यह सुबह-सुबह कहां जाने की तैयारी हो रही है?

डैडी, हम अपने एक दोस्त की बहन की शादी में जा रहे हैं।
और अंकल, रात को लौटने की भी उम्मीद नहीं है।
क्या–? फिर मैं तुम लोगों को जाने की इजाजत नहीं दे सकता।

ओ मेरे प्यारे डैडी, जाने दीजिये न !
प्लीज अंकल, वायदा करते हैं कल सुबह तक जरूर आ जायेंगे।
अरे-रे-यह क्या कर रहे हो?

पहले इजाजत दीजिये।
वरना अंकल, हम आपसे इसी प्रकार चिपटे रहेंगे।
ओफ्फ! अच्छा बाबा जाओ, लेकिन मुझे छोड़ो तो सही!

और राम-रहीम प्रसन्नता से चीख उठे।
अंकल जिंदाबाद!
डैडी जिन्दाबाद!
बस-बस रहने दो।

तुम दोनों बहुत शैतान हो गये हो। कहीं शादी में जाने के बहाने के पीछे कोई झूठ तो नहीं!
बिल्कुल भी नहीं डैडी!
विश्वास करें अंकल!
तब ठीक है, जाओ!

और इजाजत मिलते ही राम-रहीम एक तरफ खड़ी अपनी मोटर साइकिल की ओर दौड़ पड़े।
लेकिन कल सुबह तक जरूर लौट आना!
प्रॉमिस डैडी!
प्रॉमिस अंकल
???

अरे-अरे ठहरो, कहां जा रहे हो तुम दोनों!
जाने दो राधा, पीछे से टोकना अशुभ होता है।

परन्तु मोटर साइकिल से न तो राम ने और न ही रहीम ने पलटकर पीछे देखा। अगले ही पल मोटर साइकिल कोठी से बाहर निकल कर उनकी नजरों से ओझल हो चुकी थी।
यह सवेरे-सवेरे कहां गये हैं दोनों?
अपने एक दोस्त की बहन की शादी में। कल सुबह तक लौटेंगे।

और आपने रात भर उन्हें बाहर रहने की इजाजत दे दी।
और क्या करता? आखिर वे अब दूध पीते बच्चे तो रहे नहीं।

कर्नल राघव की बात सुनकर राधादेवी झुंझलाती हुई भीतर की ओर चल दीं।
ये दोनों आपके लाड़-प्यार में बिगड़ते चले जा रहे हैं। मुझे क्या, एक दिन आप ही पछतायेंगे।
मुझे अपने दोनों बेटों पर विश्वास है। एक दिन तुम भी करने लगोगी।

लेकिन राम-रहीम, कर्नल राघव व राधादेवी में से कोई भी यह नहीं जानता था कि कल रात से ही विभिन्न व्यक्ति उनके घर और घर में होनेवाली एक-एक गतिविधि पर बारी-बारी से नजर रखे हुए थे, और एक व्यक्ति इस समय भी उनकी कोठी पर निगरानी रखे हुए था।
वे दोनों चले गये, अपने साथियों को खबर करूं!

कुछ देर बाद वह बदमाश सरीखा व्यक्ति निकट के ही एक पब्लिक बूथ में किसी के नम्बर डॉयल कर रहा था।
किर्र... किर्र... किर्र...

डायल करने के पश्चात् सम्पर्क होते ही उसने एक सिक्का बॉक्स में डाला, फिर शीघ्रता से माऊथ पीस में बोला—
हैलो, कौन जग्गू? मैं बिरजू बोल रहा हूं।

फोन पर दूसरी ओर शहर का एक कुख्यात बदमाश जग्गू था।
उस्ताद, बिरजू का फोन है।
ओह!

हैलो बिरजू, मैं भीमा बोल रहा हूं। क्या बात है?
उस्ताद, आज मौका अच्छा है। दोनों छोकरे रात-भर के लिये घर से बाहर रहेंगे।

गुड! तो आज रात ही हम अपना काम करेंगे। तुम वहीं रहो और उनकी गतिविधियों पर नजर रखो।
ओ.के. उस्ताद!

और रात के लगभग ग्यारह बजे एक काले रंग की वैन कर्नल राघव की कोठी के सामने लगे एक बिजली के खम्बे के सामने खड़े बिरजू के निकट आकर रुकी।
ओह—उस्ताद!

बिरजू व जग्गू का उस्ताद वैन से नीचे उतरा।
क्या रिपोर्ट है बिरजू?
सब ठीक है उस्ताद, वह कर्नल और उसकी बीवी भीतर मौजूद हैं। शायद सो चुके हैं और वे दोनों छोकरे राम-रहीम अभी तक नहीं लौटे।
गुड—!

जग्गू, तुम गाड़ी को कोठी के गेट के सामने लगाओ। कोई खतरा देखो तो हार्न बजा देना। मैं बिरजू के साथ पिछवाड़े से कोठी के भीतर प्रविष्ट होता हूं।
ओ.के. उस्ताद!

भीमा और बिरजू कोठी के पिछवाड़े से दीवार फांद कर भीतर घुसे।
उसका कमरा उस तरफ है।
ठीक है, चलो।

कुछ देर बाद वे दोनों उस कमरे की खिड़की के निकट थे जिसके भीतर कर्नल राघव और उनकी पत्नी सोये हुए थे।
शुक्र है, खिड़की खुली है और दोनों गहरी नींद सोये हुए हैं। क्या भीतर घुसूं?
ठहरो, पहले मैं इन्हें बेहोश कर दूं, ताकि किसी किस्म की गड़बड़ न हो।

भीमा ने अपनी जेब से एक प्लास्टिक की बंद शीशी निकाली।
इस शीशी में भरी गैस उन्हें दस सैकेन्ड में कई घण्टों के लिये बेहोश कर देगी।
???

फिर उसकी डाट अलग करने के बाद उसने उसे खिड़की से भीतर उछाल दिया।
और खिड़की धीरे से बन्द कर दी।

फर्श पर गिरने के साथ ही उस प्लास्टिक की शीशी में से सफेद रंग का धुआं निकल कर कमरे में फैलने लगा।
सिस...सिस!

ठीक दस सैकेन्ड बाद भीमा ने खिड़की पुनः खोल दी।
पहले धुआं निकलने दो, फिर भीतर प्रवेश करेंगे।
ठीक है उस्ताद!

धुआं छंटने के बाद दोनों खिड़की के रास्ते भीतर पहुंचे।
यह औरत तो पूरी तरह बेहोश है उस्ताद!
और हमारा यह शिकार भी! तुम दरवाजा खोलो, तब तक मैं इसे चादर में पैक करता हूं।
अच्छा!
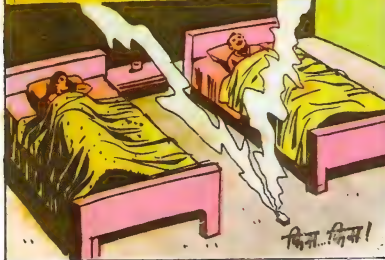
बिरजू ने द्वार की कुंडी गिराई और भीमा ने कर्नल राघव को चादर में लपेट अपने कंधे पर लाद लिया।
चलो, अब निकल चलो यहां से।
लेकिन उस्ताद, यह औरत...?
हमें इसके लिये कोई आदेश नहीं मिला है, इसे यहीं पड़ी रहने दो!

शीघ्र ही वे दोनों कोठी से निकल कर गेट के बाहर खड़ी अपनी वैन के निकट पहुंचे। उन्हें देख जग्गू ने फुर्ती से गाड़ी से उतर कर वैन का पिछला दरवाजा खोल दिया।
कोई लफड़ा तो नहीं हुआ न जग्गू!
नहीं उस्ताद, अभी तो कोई यहां से गुजरा तक नहीं।

फिर बिरजू, बेहोश कर्नल राघव के साथ पिछले हिस्से में बैठ गया और भीमा, जग्गू के साथ आगे। जग्गू ने वैन स्टार्ट कर तीव्र गति से एक दिशा में दौड़ा दी।
उस्ताद, किधर चलूं?
पूर्वी किनारे पर चलो। उस चीनी ने इसे वहीं पहुंचाने के लिये कहा था।

लगभग आधे घंटे बाद वैन समुद्र के पूर्वी तट पर पहुंची।
जग्गू, गाड़ी को उन पेड़ों के झुरमुटों के पीछे ले चलो।
बहुत अच्छा उस्ताद!

पेड़ों के झुरमुटों के पीछे पहुंचने के पश्चात् तीनों वैन से नीचे उतर आये।
उस्ताद, यहां तो दूर-दूर तक कोई नहीं!
चिन्ता मत करो, आ जायेगा। उन्होंने हमें यहीं इंतजार करने के लिये कहा था।

तभी-
उस्ताद वह देखो।
स्टीमर, शायद उसी चीनी का है। फिर भी छिप जाओ। हमें कोई खतरा नहीं उठाना है। यदि स्टीमर गश्ती पुलिस का हुआ तो मुसीबत आ जायेगी।

फिर तीनों फुर्ती से पेड़ों के पीछे ही छिप गये। शीघ्र ही - स्टीमर किनारे से लगा और उसमें से एक व्यक्ति उतरा। फिर वह जेब से टार्च निकालकर उसे जलाने-बुझाने लगा।
उस्ताद, वह तो किसी प्रकार का सिग्नल दे रहा है।
वह वही है, चलो।

तीनों स्टीमर से उतरने वाले व्यक्ति के पास पहुंचे। वह व्यक्ति और कोई नहीं, चीनी सीक्रेट सर्विस के चीफ कामरेड तुंग का दाहिना हाथ बांग-ली था।
क्या रहा?
शिकार हमारे कब्जे में है मि० बांग-ली, और बेहोश है।

शाबाश! उसे स्टीमर में पहुंचाओ, मैं तुम्हें बहुत बड़ा इनाम दूंगा।
लड़कों, जाकर शिकार को ले आओ।
बहुत अच्छा!

जग्गू और बिरजू ने बेहोश कर्नल राघव को वैन से उठाकर स्टीमर में पहुंचा दिया।
सचमुच भीमा, तुमने हमारे लिये एक बहुत बड़ा काम किया है। लो अपना पारिश्रमिक और इनाम। आपस में बांट लेना।

धन्यवाद मि० बांग-ली, और कोई सेवा हमारे लिए!
फिलहाल कोई नहीं, समय आने पर जरूर बताऊंगा।

भीमा, बिरजू और जग्गू स्टीमर से उतर कर जमीन पर आ गये और स्टीमर वापस उसी दिशा में लौट पड़ा, जहां से आया था।
वाह! क्या कीमत दी है उस चीनी ने कर्नल की, उस्ताद!
हां उस्ताद, कुछ समझ में नहीं आता, उन्होंने उस कर्नल के लिये इतनी मोटी रकम क्यों खर्च की?
वह हम लोगों के लिये साधारण हो सकता है, लेकिन उसके लिये नहीं। जरूर कोई महत्वपूर्ण भेद उगलवाने के लिये उन्होंने उसका अपहरण करवाया है।
खैर, हमें उससे क्या लेना-देना। लो अपना-अपना हिस्सा सम्भालो।
लाओ उस्ताद, अब तो महीनों कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बस मौज ही मौज होगी।
भीमा ने जग्गू और बिरजू का हिस्सा उन्हें दे अपना हिस्सा जेब में ठूंस लिया। सहसा नोट जेब में रखता बिरजू बुरी तरह चौंका।
अरे!
क्यों बे-क्या हुआ? अभी से शराब की बोतल दिमाग में घूमने लगी है क्या?
वो बात नहीं उस्ताद, लगता है मेरा बटुआ कहीं गिर गया है।
अबे गिर गया तो गिर जाने दे। उसमें कौन से तूने नोट रख रखे होंगे। चलो अब फूट लो, सुबह होने में कुछ ही घण्टे बाकी हैं।
फिर आपस में हंसी मजाक करते हुए तीनों प्रसन्न मुद्रा में अपनी गाड़ी के निकट पहुंचे।
उस्ताद, कल का क्या प्रोग्राम है?
कुछ दिनों तक किसी काम का कोई प्रोग्राम नहीं, केवल सामने शराब होगी और हाथों में ताश के पत्ते।
हा..हा..हा!
फिर वे वैन में सवार हो वापस शहर की ओर लौट पड़े
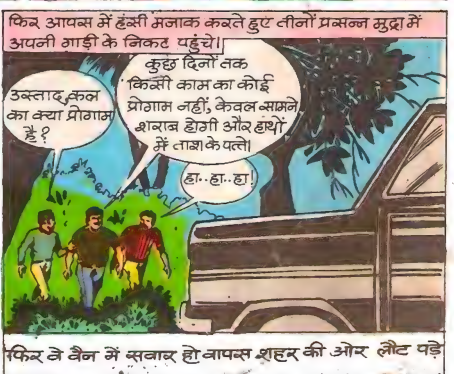
उधर सुबह के लगभग दस बजे राम और रहीम अपने दोस्त की बहन की शादी से घर वापस लौटे--

अरे--पुलिस और हमारे घर में!

क्या चक्कर हो सकता है?

मोटर साइकिल खड़ी कर राम-रहीम हड़बड़ाए हुए से घर के भीतर पहुंचे।

उफ! मम्मी रो रही हैं।

या अल्लाह, यहां क्या हुआ है हमारे पीछे से।

राम-रहीम को देखते ही राधादेवी रोती हुई उनसे लिपट गयीं और फूट-फूट कर रोने लगीं।

मेरे बेटे--!

क्या हुआ मम्मी, आप रो क्यों रही हैं? सब खैरियत तो है न--?

हां आंटी, बताइये ना क्या हुआ?

...छानबीन से हमें यह भी पता चला है कि कोठी में प्रविष्ट होने वाले बदमाश दो थे और वे खिड़की के रास्ते कमरे में घुसे थे। खिड़की के बाहर उनके पदचिन्ह भी हमें मिले हैं। और कर्नल साहब के पलंग की चादर के गायब होने से मैं यह बात भी दावे से कह सकता हूं कि उन्हें कमरे से चादर में लपेट कर ले जाया गया है।

राम-रहीम राधादेवी को लेकर एक कमरे में पहुंचे।
तुम्हारे पिता को अगर कुछ हो गया राम तो मैं भी जिंदा नहीं रहूंगी।
ऐसा न कहिए आंटी, उन्हें कुछ नहीं होगा।
हां मम्मी, यदि बदमाशों ने डैडी को मारना ही होता तो वहीं मार सकते थे, फिर उनका अपहरण करने की उन्हें क्या आवश्यकता थी...

...जरूर किसी और उद्देश्य से उन्होंने पिताजी का अपहरण किया है, लेकिन अब उनकी खैर नहीं। मैं उन्हें पाताल से भी खोज निकालूंगा, आप आराम कीजिये। हम देखते हैं आखिर चक्कर क्या है? रहीम, तुम मेरे साथ आओ।
अच्छा भइया!

फिर राधादेवी को कमरे में छोड़ वे दोनों बाहर निकल कर उस खिड़की के निकट पहुंच गये, जहां से बदमाश भीतर दाखिल हुए थे।
हुम्म! यहां से वे बदमाश भीतर दाखिल हुए थे। ये देखो उनके पदचिन्ह!
भइया, ये पदचिन्ह तो उस दीवार की ओर जा रहे हैं।

दोनों पदचिन्हों के सहारे-सहारे आगे बढ़े—
शायद वे दीवार फांद कर ही भीतर दाखिल हुए थे!
बड़ी अजीब बात है गेट की बजाए दीवार से...।

पदचिन्ह एक तरफ की दीवार के निकट पहुंच कर खत्म हो गये।
वे अवश्य ही इस दीवार को फांद कर आये थे।
अरे—वह क्या?

और रहीम ने लपककर उस वस्तु को उठा लिया, जो कि वास्तव में एक बटुआ था।
राम भइया, यह देखो किसी का बटुआ है।
अरे, दिखाना तो!

राम ने रहीम से बटुआ लेकर खोला।
ओह, बटुआ तो खाली है, लेकिन यह फोटो तो शक्ल-सूरत से किसी बदमाश की ही लगती है।
निश्चय ही यह अपहरणकर्ताओं में से किसी एक का होगा।
हो सकता है।
चलो एक सूत्र तो हाथ लगा, लेकिन आश्चर्य है पुलिस की दृष्टि इस पर क्यों नहीं पड़ी, जबकि खिड़की के बाहर पदचिन्ह वे देख चुके थे।
यह संयोग ही है रहीम कि तुम्हारी दृष्टि इस पर पड़ गयी, वरना झाड़ी के बीच भला किसकी दृष्टि इस पर पड़ सकती थी!
क्या पुलिस को इस बटुए के सम्बंध में सूचित करें? यदि यह वास्तव में कोई जाना-माना बदमाश है तो पुलिस के पास अवश्य ही इसका रिकार्ड होगा। उस रिकार्ड के द्वारा हम आसानी से इस तक पहुंच सकते हैं।
नहीं रहीम, ऐसा करना उचित नहीं होगा। पुलिस द्वारा यह खबर अखबार वालों तक भी पहुंच सकती है। जिससे न केवल अपराधी चौकन्ना हो जायेगा, बल्कि डैडी के प्राण भी खतरे में पड़ जायेंगे।

और कुछ देर बाद दोनों मोटर साइकिल पर सवार हो बाल सीक्रेट सर्विस के हेडक्वार्टर की ओर उड़े चले जा रहे थे।

SUN BE
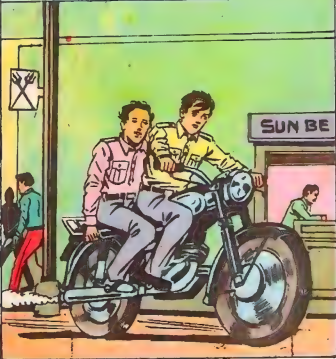
लगभग पन्द्रह मिनट पश्चात् वे चीफ मुखर्जी के सामने बैठे उन्हें सारे किस्से के बारे में बता रहे थे। सब कुछ बताने के पश्चात् राम ने जेब से वही झाड़ियों में मिला बटुआ निकाला और चीफ की ओर बढ़ाता हुआ बोला-
चीफ, यह बटुआ हमें उसी दीवार के निकट एक झाड़ी में पड़ा मिला है। इसमें एक बदमाश सरीखे व्यक्ति की फोटो भी है, क्या आप बता सकते हैं कि यह फोटो वास्तव में किस बदमाश की है ?
ओह!

चीफ ने बटुआ लेकर खोला और फोटो पर दृष्टि पड़ते ही वे चौंक उठे।
अरे, यह तो शहर के शातिर बदमाश बिरजू की फोटो है, हमारे विभाग की नजर काफी समय से इस पर है, लेकिन प्रमाण के अभाव में हम आज तक इसे गिरफ्तार नहीं कर पाये।

यदि आपका कहना सच है चीफ, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अब यह कानून के कठोर पंजे से बच नहीं पायेगा। कृपया आप मुझे इसके अते-पते के बारे में बताइये।
इन जैसे बदमाशों का पता ठिकाना कुछ नहीं होता बेटे...

...फिर भी इसका जो रिकार्ड हमारे पास है, उसके मुताबिक यह अधिकांश समय माता रोड के पीछे बसी एक निम्न श्रेणी की बस्ती जे. जे. कालोनी के मकान नं. तेरह में गुजारता है। उस मकान के बारे में हमें यह भी खबर मिली है कि कभी-कभार जरायम पेशे के लोग वहां मीटिंग करने भी आते हैं।

एकाएक राम उठता हुआ आवेश भरे स्वर में बोला-
बस चीफ, हमारे लिये इतनी ही जानकारी काफी है। बाकी समय वह कहां गुजारता है, हम खुद ही मालूम कर लेंगे- चलो रहीम।
ठहरो राम, इतनी जल्दबाजी अच्छी नहीं...

...मुझे तुम्हारे पिता के अपहरण का मामला साधारण नहीं लगता। वे सेना के एक विशिष्ट आफिसर हैं। हो सकता है किसी दुश्मन देश ने सेना का कोई भेद जानने के लिये उनका अपहरण किया हो, अतः जोश में न आकर ठंडे दिमाग से काम लेना ही तुम लोगों के लिए उचित होगा।

चीफ की बात सुनकर राम की आंखों में खून उतर आया।
यदि यह सच हुआ चीफ कि उनके अपहरण के पीछे किसी दुश्मन देश का नापाक हाथ है और वह डैडी से हमारे देश के सैनिक राज जान कर हमारी धरती मां को खून से रंगना चाहता है तो इस तिरंगे की कसम चीफ, हम सबका सिर कुचल कर रख देंगे।
मुझे भी इस तिरंगे की कसम है चीफ!

मुझे विश्वास है मेरे बच्चो, तुम्हारे रहते दुश्मन हमारी धरती मां की ओर आंख उठा कर भी नहीं देख सकता, लेकिन यदि वास्तव में तुम्हारे डैडी का अपहरण किसी फौजी भेद को जानने के लिए किया गया है तो तुम्हारा अकेले उन बदमाशों से टकराना उचित नहीं होगा। क्यों न इस मामले में सिनियर एजेंटों से कार्य लिया जाए!

आप चिन्ता न करें चीफ, बड़े से बड़े बदमाश से कैसे निपटना चाहिए, हम यह अच्छी तरह जानते हैं—फिर भी यदि मदद की जरूरत पड़ी तो वॉच ट्रांसमीटर पर हम आपसे सम्पर्क कर लेंगे, चलो रहीम।
फिर राम-रहीम वहां रुके नहीं औ हेडक्वार्टर से बाहर निकलकर मोटर साइकिल पर सवार हो जे.जे. कालोनी की ओर चल पड़े।

राम ने जे.जे. कालोनी में प्रविष्ट हो मकान नम्बर तेरह के सामने मोटर साइकिल रोकी।
यही हैं वह मकान, जिसके बारे में चीफ ने कहा था।
13
तो चलो सेवा करें उस सुअर बिरजू की।

दोनों भीतर प्रविष्ट हुए, तभी एक भयानक शक्ल-सूरत का व्यक्ति उनके सामने आ खड़ा हुआ।
ए—ए छोकरो, कहां घुसे जा रहे हो। निकलो बाहर।
बिरजू कहां है?
क्या मतलब, कौन हो तुम?

उत्तर देने की बजाए रहीम ने एक जोरदार घूंसा उसके चेहरे पर दे मारा।
धड़ाक्...
हम हैं उसके बाप!
आह!

और इससे पहले कि वह बदमाश सम्भल पाता, राम ने रिवाल्वर निकाल कर उसके सीने पर रख दिया।
बताओ कहां है बिरजू?
म... मुझे नहीं मालूम!
यह ऐसे नहीं बतायेगा राम भइया!

दूसरे ही क्षण रहीम के हाथ-पैर फिर तेजी के साथ घूमे और घूमते ही चले गये।
भला लातों के भूत भी कभी बातों से मानते हैं!
ढिसूंग
हाय मरा!

उस बदमाश सरीखे व्यक्ति की भयानक चीखें फ़िजा में गूंजने लगीं!
उफ़!
आह!
बचाओ...
कोई नहीं बचायेगा बेटे!

कुछ ही देर बाद वह किसी अरने भैंसे के समान फर्श पर पड़ा बुरी तरह हांफ रहा था।
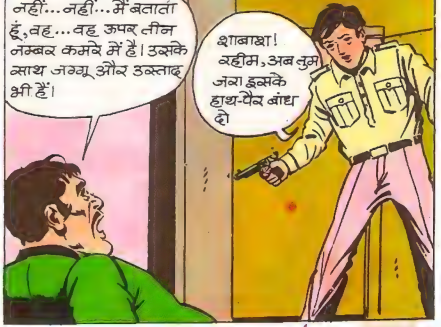
बदमाश एकदम भयभीत होकर बोल उठा-

और रहीम ने हाथ-पैर बांधने में जरा भी सुस्ती नहीं दिखाई।

फिर दोनों एक तरफ बने जीने से ऊपर चढ़ते चले गये।

कुछ ही क्षणों पश्चात् वे ऊपर बने कमरों में से तीन नम्बर के कमरे के सामने थे। राम ने की-हॉल से भीतर झांका।

राम के पीछे हटते ही रहीम ने दरवाजे पर भरपूर ठोकर मारी।
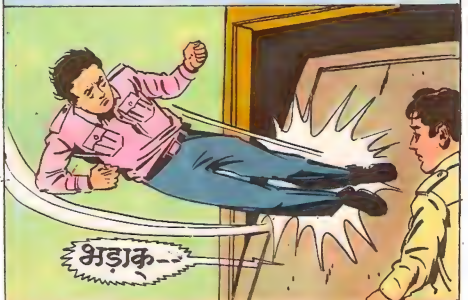
और जोरदार आवाज के साथ ही वह कमजोर दरवाजा टूट कर भीतर जा पड़ा।

कमरे के भीतर मौजूद बिरजू, जग्गू और उनका उस्ताद भीमा दरवाजे के टूटने की आवाज को सुन चौंक कर उछल पड़े।
राम-रहीम।
ये कम्बख्त यहां कहां से आ मरे?
खबरदार, कोई गलत हरकत करने की चेष्टा मत करना।
शुक्र है। हमें पहचाना तो सही! अब जरा यह भी बता दो कर्नल राघव कहां हैं?
कौन कर्नल राघव?
वही कर्नल राघव, जिनका तुमने कल रात अपहरण किया है।
तुम्हें गलतफहमी हुई है भइया। हम तो कई दिनों से यहां से निकले ही नहीं।
सहसा रहीम की सहन शक्ति जवाब दे गयी और वह क्रोध से चीख उठा-
मूर्ख बनाने की कोशिश मत करो गन्दे कुत्ते, सच-सच बताओ कहां हैं मेरे अंकल, वरना मैं तुम लोगों की बोटी-बोटी काटकर चील कौवों को खिला दूंगा।
हम सच कह रहे हैं, हमें पता नहीं।
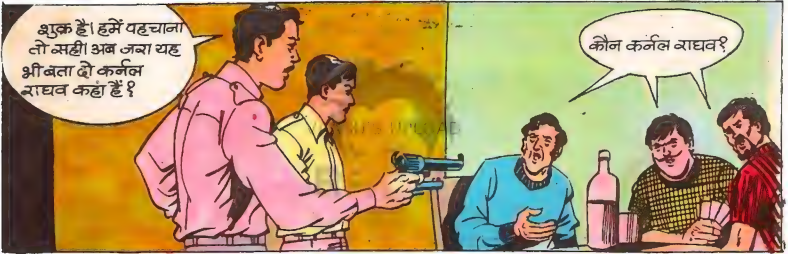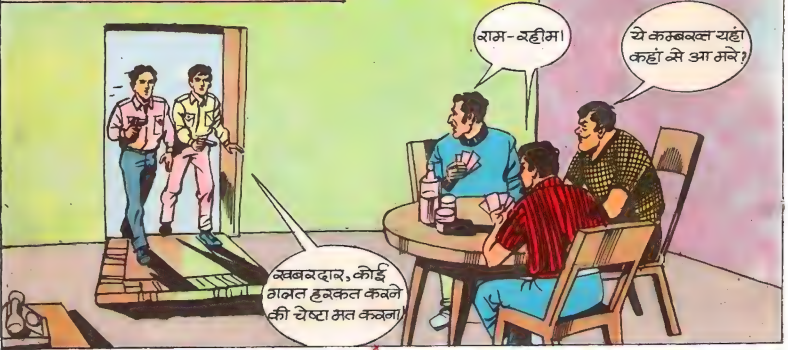
हो सकता था कि रहीम क्रोध में उन पर फायर कर बैठता, तभी राम ने उसे रोकते हुए शांत स्वर में कहा--
चलो, मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लेता हूं। हो सकता है, तुम लोगों ने मेरे डैडी का अपहरण नहीं किया हो, लेकिन बिरजू, क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारा बटुआ कहां है?
बटुआ!
बटुए का जिक्र सुनते ही बिरजू के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।
परन्तु अगले ही पल वह अपने आपको सम्भालते हुए बोला-
म... मैंने तो आज तक कभी अपने पास बटुआ रखा ही नहीं, तुम किस बटुए की बात कर रहे हो?
इस बटुए की!
राम ने जेब से बटुआ निकालकर तुरन्त उसके सामने कर दिया।
अपना बटुआ राम के हाथ में देख बिरजू बुरी तरह सकपका कर अपने सूखें होंठों पर जीभ फेरने लगा।
क्यों, क्या अब भी तुम्हें इन्कार है कि यह तुम्हारा बटुआ नहीं?
नहीं, यह मेरा नहीं है। तुम बेकार ही मुझे किसी चक्कर में फंसाने की कोशिश कर रहे हो।
बिरजू को पुनः साफ मुकरता देख राम का चेहरा भी क्रोध से सुर्ख हो उठा, लेकिन अपने क्रोध को दबाने की चेष्टा करता हुआ वह ठंडे स्वर में बोला-
चलो मान लिया कि यह बटुआ भी तुम्हारा नहीं, लेकिन यह तो बता सकते हो कि यह बटुआ हमारी कोठी के भीतर कैसे आया?
जब यह मेरा है ही नहीं, तो मैं भला इस सम्बंध में क्या बता सकता हूं?
राम भइया, बिना लात और जूतों के ये एक भी बात नहीं मानने वाले। तुम ठहरो, अब मैं मनवाता हूं इनसे सारी बात।

और फिर इससे पहले कि राम उसे रोक पाता रहीम ने रिवाल्वर जेब में रख भयानक ढंग से बिरजू पर छलांग लगा दी।

गंदे कीड़े, अभी बताओगे तुम सब कुछ!
कड़ाक्-!
उफ!
???

बिरजू की पिटाई होते देख जग्गू ने उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ना चाहा, लेकिन उसी समय राम गुर्रा उठा–
खबरदार, तुम दोनों अपने स्थान से हिलने की चेष्टा मत करो, वरना...!
ओह!
और वे दोनों अपने स्थान पर सहम कर स्थिर हो गये।

कुछ ही देर बाद बिरजू फर्श पर बेहोश पड़ा दिखाई दे रहा था।
अब तुम चार घण्टे से पहले होश में नहीं आओगे बच्चू!
ओह, बिरजू को उसने बेहोश कर दिया!
केवल चन्द ही सैकेण्डो में- लड़का है या शैतान!

तभी रहीम जग्गू की ओर बढ़ा –
अब तुम्हारा क्या इरादा है बेटे!
भलाई इसी में है कि तुम सब कुछ बता दो, वरना रहीम के हाथों हड्डियां तुड़वा बैठोगे।
हम... हमें कुछ नहीं मालूम!

भीमा को सबकुछ बताने पर राजी होते देख राम और रहीम के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।

शाबाश! तो फिर शुरू हो जाओ।

उसका नाम बांग-ली है। चीनी सीक्रेट सर्विस का खतरनाक एजेण्ट-!

और फिर भीमा बाकायदा किसी टेपरिकार्डर की तरह चालू हो गया और जो कुछ भी वह जानता था, राम रहीम को बताने लगा।

जब सब कुछ जानकारी देने के पश्चात् भीमा खामोश हुआ तो रहीम खूंखार स्वर में बोला--
सुनो पहलवान, जो कुछ तुमने बताया, यदि वह गलत साबित हुआ तो याद रखना, मैं तुम्हारे नाक-कान काटकर तुम्हारी लाश को बीच चौक में टांग दूंगा।
मैंने जो कुछ भी बताया है, वह बिल्कुल सच है, अब मुझे जाने दो।
तब राम और रहीम में आंखों ही आंखों में किसी बात पर विचार-विमर्श हुआ, फिर राम ने ही शांत स्वर में कहा--
ठीक है, तुम जा सकते हो।
हां-हां भाई, जाओ। अब तो तुम हमारे दोस्त हो।
क्या-मैं जा सकता हूं?
इतनी आसानी से राम-रहीम से अपना पिंड छूटते देख भीमा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।
लेकिन फिर यह विश्वास होते ही कि राम-रहीम उसे वास्तव में जाने के लिये कह रहे हैं, वह तेजी से जाने के लिये पलटा, लेकिन तभी राम का रिवाल्वर वाला हाथ हवा में उठकर बिजली की-सी तेजी के साथ उसकी कनपटी पर पड़ा।
आह!
कड़ाक--
भीमा को एक बारगी तो ऐसा ही महसूस हुआ जैसे उसके सिर पर अचानक ही कोई पहाड़ टूट कर आ गिरा हो।
और दूसरे ही क्षण वह बेहोश होकर फर्श पर लुढ़क गया।
चलो यह भी गया, कई घंटों के लिये। राम भइया, यदि बिरजू का बटुआ हमें न मिलता तो इतने भयानक षड्यंत्र की हमें कभी भनक भी नहीं मिल पाती।
लेकिन रहीम, अब समय नष्ट न करके तुरंत चीफ को फोन करो और उन्हें जल्द से जल्द यहां पहुंचने के लिये कहो। हम यहां अधिक समय तक नहीं रह सकते।
ओ.के.!
और रहीम एक तरफ रखे फोन की ओर बढ़ गया।

रहीम ने रिसिवर उठाकर चीफ के नम्बर डॉयल किये, फिर सम्पर्क होने पर बोला—
हैलो चीफ, मैं जे.जे.कालोनी के मकान नम्बर तेरह से रहीम बोल रहा हूं। कृपया तुरन्त अपने आदमियों को लेकर यहां पहुंचिये।
ओह! क्या बिरजू मिल गया?

यस चीफ! और इस समय बेहोश पड़ा आपके पहुंचने का इंतजार कर रहा है। उसके तीन साथी भी आपको यहीं मिलेंगे। उनमें से एक मृत, दो बेहोश और एक बंधा हुआ मिलेगा।
बिरजू से कुछ जानकारी मिली?

बहुत कुछ जानकारी मिली है चीफ, लेकिन इस समय कुछ बताने का समय नहीं। हम अंकल की खोज में जा रहे हैं।
हैलो-हैलो रहीम—सुनो तो बेटे।
परन्तु दूसरी ओर से रहीम सम्बंध विच्छेद कर चुका था।

उसके बाद दोनों सीढ़ियों से होते हुए नीचे हालनुमा कमरे में पहुंचे। वह बदमाश सरीखा व्यक्ति वहां ज्यों का त्यों बंधा पड़ा था।
कुछ देर तुम्हें और तकलीफ उठानी पड़ेगी दोस्त। फिर तुम्हारे उस्ताद आकर तुम्हें इस कष्ट से मुक्ति दिला देंगे।
अच्छा-अच्छा धन्यवाद

फिर मकान से बाहर निकलकर दोनों मोटर साइकिल पर सवार हुए और राम ने मोटर साइकिल सी पोर्ट की ओर दौड़ा दी।
राम भइया, तुम्हें विश्वास है कि मीना ने जो कुछ भी कहा है वह सच कहा है?
फिलहाल तो विश्वास करने के अलावा और कोई चारा ही नहीं, परन्तु जल्दी ही सच और झूठ का पता चल जायेगा।

लेकिन भइया, दुश्मनों की मांद में हमारा इस तरह अकेले जाना उचित न होगा। हो सकता है हम वहां जाएं और वहीं फंस कर रह जाएं।
यदि तुम्हें डर लग रहा है तो यहीं उतर जाओ। मैं अकेला ही उन चीनी एजेण्टों से निपट लूंगा।

मुद्रक : गोयल आफसैट वर्क्स, दिल्ली